भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 3224
31 मार्च, 2022 को उत्तर दिए जाने के लिए

हिमालय में कम हिमपात

3224. श्री मो. नदीमुल हक:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या हाल ही में किए गए किसी अध्ययन से पता चला है कि विगत कुछ वर्षों के दौरान हिमालय में कम हिमपात हुआ और वर्षा अधिक हुई है;
(ख) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ग) क्या यह सच है कि इसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में, भुस्खलन, हिमस्खलन, बाढ़ आदि की घटनाएं बढ़ सकती है;
(घ) यदि हाँ, तो इन आपदाओं को रोकने के लिए सरकार द्वारा अपनाए गए उपायों सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ङ) क्या सरकार ने इस क्षेत्र को और अधिक परिस्थितिकीय क्षति, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में गर्मी और अधिक बढ़ सकती है, से बचाने के लिए कोई उपाए किए हैं; और
(च) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) जी, हां।

(ख) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केन्द्र (NCPOR) ने अपने अनुसंधान में पाया है कि वर्ष 1979-2018 के दौरान पश्चिमी हिमालय के चार ग्लेशियराइज्ड बेसिन (चंद्रा, भागा, मियार, तथा पार्वती) में कुल मिलाकर वर्षा में गिरावट का ट्रेंड देखा गया है। तथापि, यह ट्रेंड एकपक्षीय नहीं है, अपक्षरण (ग्रीष्म) ऋतु (15.4%) की तुलना में संचयन (शीत) ऋतु के दौरान वर्षा में अधिक (23.9%) कमी आई है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन इंगित करते हैं कि हालांकि हिमपात में कमी आ रही है, जबकि इन ग्लेशियराइज्ड बेसिन में लिक्विड प्रिसिपिटेशन (वर्षा) में विशेष रूप से संचयन माह के दौरान वृद्धि हो रही है।

(ग) जी, हाँ। वसंत के दौरान हिमपात के स्थान पर वर्षा में वृद्धि के परिणामस्वरूप हिमनद जल्दी पिघलेगा हिमनद पिघलने की दर में वृद्धि के साथ हिमस्खलन एवं आकस्मिक बाढ़ की आवृत्ति एवं परिमाण में तेजी आ सकती है।

(घ) हिमस्खलन, भूस्खलन प्राकृतिक घटनाएं हैं, जिन्हें रोका नहीं जा सकता है। तथापि, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय तथा रक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत विभिन्न संस्थानों द्वारा वर्षा एवं हिमपात सम्बन्धी पूर्व चेतावनी एवं पूर्वानुमान जारी किए जा रहे हैं।

(च)-(छ) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय इन क्षेत्रों के लिए मौसम पूर्वानुमान एवं चेतावनियां जारी करता है, तथा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पारिस्थितिकीय क्षति एवं संवहनीय पर्यटन गतिविधियों से सम्बन्धित अन्य उपायों को प्रबन्धित किया जा रहा है।

*****